श्री राजश्यामा जी

परमधाम में श्री कृष्ण जी नही है

प्राणों के प्रीतम आतम सम्बन्धी श्री राज जी महाराज के लाडले श्री सुन्दरसाथ जी एवं धर्मप्रेमी साथियो ! मै भी कभी संसार के जीवों की भांति लोक लाज मर्यादा और रूढ़ीवादियों में फंसकर अपने धर्म को भूल गया था धर्म की परिभाषा तो बड़ी लम्बी है, सिर्फ इतना ही जानता हूँ कि आस्था का नाम धर्म है।

प्यारे सुन्दसाथ जी। सत्य को दर्शाने का कार्य बहुत बड़ा है और इसका वर्णन करना मेरे जैसे तुच्छ जीव की शक्ति से सम्भव नहीं है। उस धाम धनी श्री जी साहिब जी के दिये हुये बल-बुद्धि प्रेरणा तथा हुकम से लेखनी द्वारा श्री मुखवाणी के आधार पर सत्य की पहचान कराने का साहस कर रहा हूँ। प्रकाश गुजराती का ३३वाँ प्रकरण भागवत के सार से सम्बन्धित है। इसी प्रकरण को २० वी. चौपाई में कहा गया है कि जोश चले जाने पर सुकदेव जी ने राजा परिक्षित से पंच अध्यायी रास का वर्णन किया।

त्यारे भागे आवेश कहीं पंच अध्याय, पर रास नं परणयो तेणे वाय।
प्रकाश गु. ३३/२०

२१वी. चौपाई मे कहा गया है सम्पूर्ण भागवत का सार रास ग्रन्थ की वाणी है जो श्री इन्द्रावती के तन से जाहिर हुई है।

सथलानो सार आवे रास, जो इन्द्रावती मुख थयो प्रकाश
प्र.गु. ३३/२१

२२वीं चौपाई का भावार्थ यह है कि अब मैं रास का जो सार कहती हूँ वह तारतम है। तारतम का भी सार उस परमधाम की ओर निर्देश देता है जहाँ अपने प्राणों के आधार श्री राज जी विराजमान है।

हवे रास तणों सार तमने कहूँ, तेतां आपणं तारतम थयूँ।
तारतम सारे आछे निरधार, जिहाँ बसे छे आपणा आधार।। प्र.ग्र. ३३/२२

२३वी. चौपाई से यह पूर्ण रूप से स्पष्ट हो जाता है कि तारतम का सार प्राप्त होने का परिणाम यह है कि हमें अपने मूल घर परमधाम का ज्ञान हो जाता है तथा यह भी ज्ञात हो जाता है कि जिस श्रीकृष्ण जी ने लीला की थी उनका रूप योग माया में स्थित है।

ते माटे हु कहयू एम, नहीं तो रामतजे कीधी श्रीकृष्ण।
ए नामनू तारतमू में केम कहवाय, साथ संभारी जुओ जीव माहे।। प्रकाश गुजराती चौ. ६

इसलिए जिस श्रीकृष्ण जी ने अखण्ड रास की है वह योगमाया (कृष्णतत्व) का तन था जो आज भी वहाँ अखण्ड है। श्री कृष्ण का मूल नाम तो विष्णु के तन का है जो नन्द जी के घर आने पर

Nijanand App

गर्गाचार्य जी ने रखा था। इस प्रकार श्री जी ने तारतम वाणी में खुलासा कर दिया है कि यह नाम जो श्री कृष्ण है वह हकीकत में विष्णु भगवान का है। इसलिए हे सुन्दरसाथ जी अपने दिल में विचार करके देखिए तो यह स्पष्ट हो जाता है कि श्री कृष्ण नाम तारतम वाणी में कैसे हो सकता है। इससे सारे संशय मिट जाते है कि अक्षरातीत का कोई नाम नहीं है।

वैसे तो ब्रम्हवैवर्त पुराण में भी कहा गया है कि :-

विष्णोनाम्नां च सर्वेषा सारात्सांर परात्पर।
कृष्णेति सुन्दर नाम मंगल भक्तिदायकं।।

अर्थात विष्णु भगवान के नामों में श्री कृष्ण नाम सर्वश्रेष्ठ, सुन्दर, कल्याणकारी और भक्तिदायक है।

घर श्री धाम अने श्री कृष्ण, फल सार तणों तारतम।
तारतमें, अजवालूँ अति थाय, आसंका नव रहे मन मांहे।। प्र.गु. ३३/२३

तारतम ज्ञान के अवतरण से पहले सबको केवल इतना ही पता था कि जहाँ श्रीकृष्ण है, वहाँ रासलीला है और वहाँ ही परमधाम भी है। रासलीला के ब्रह्माण्ड से परे वह अक्षरधाम और परमधाम है इसका ज्ञान किसी को भी नहीं था। इन सारे रहस्यों को तारतम ज्ञान ने उजागर कर दिया। इसलिए इस प्रकरण की २३वीं चौपाई के तीसरे और चौथे चरण में यह बात स्पष्ट कर दी गयी है कि तारतम ज्ञान का उजाला होने के पश्चात मन में किसी भी प्रकार का संशय नहीं रह सकता है। सुकदेव मुनी और राजा परीक्षित के प्रसंग के माध्यम से हद-बेहद से परे उसे परमधाम और श्री राज जी की पहचान कराना ही इस प्रकरण का उद्देश्य है जो इस प्रकार की पहली ही चौपाई में कह दिया है। तारतम का ज्ञान आने से पहले यह किसी को भी पता नहीं था कि रासलीला करने के पश्चात अक्षरातीत उस लीला को अखंण्ड करके स्वंय परमधाम चले गए और पुनः इस जागनी के ब्रह्माण्ड में आए हैं। वल्लभाचार्य मत में केवल इतना ही ज्ञान है कि पारब्रह्म अब भी रासलीला अखण्ड रूप से कर रहे हैं। प्यारे सुन्दरसाथ जी वल्लभाचार्य मत की इस भ्रान्ति में न पड़े और अपने धनी की पहचान कर सकें।

इसलिए धामधनी ने अपने तारतम ज्ञान से सारे संशयों को दूर कर दिया कि रास की लीला करने वाले श्री कृष्ण अब भी योगमाया में लीला कर रहे है और सभी आत्माओं के प्रियतम अक्षरातीत अपने परमधाम में विराजमान है। माहेश्वर तंत्र में खोजने पर यह पता चलता है कि लक्ष्मी जी के सात कल्पांत तपस्या करने पर श्री विष्णु भगवान यह नहीं बता सके कि मोहसागर से परे वे किसका ध्यान करते हैं। उन्होंने लक्ष्मी जी को केवल इतना आश्वासन दिया कि जब मैं २८वें द्वापर के अन्त में दुष्टों के संहार तथा धर्म की स्थापना के लिए जन्म

Nijanand App

लूंगा तो वहाँ पर मेरा नाम श्री कृष्ण जी रखा जाएगा तथा तुम रूकमणी नाम से जन्म लोगी तब पारब्रह्म मेरे तन में विराजमान होकर लीला करेंगे। जब वे अपनी लीला करके चले जावेंगे तो मैं उसी लीला का नाटक करके तुम्हें यह बताऊंगा कि मैं किसका ध्यान करता हूँ।

ययाति कुल जातस्य यदुराजस्य वेश्मनि।
वासुदेवोडहंभविष्यामि नाम्ना कृष्णेति विश्रुतः।।
तत्रापि त्वम् रूक्मिणीति भविष्यसि वंरागना। माहेश्वर तन्त्र ४/४५, ४६

दुष्टों के विनाश के लिए ययाति के कुल में उत्पन्न यदुराजा के घर में श्रीकृष्ण के नाम से प्रसिद्व होऊँगा। तुम भी उस समय रूक्मिणी नामक सुन्दर स्त्री होओगी।

श्रीमद् भागवत के १०वें स्कन्ध के अनुसार कंस की जेल में चर्तुभुज स्वरूप बैकुण्ठ के विष्णु भगवान ने वसुदेव देवकी को दर्शन देकर यह बताया कि मैं तुम्हारे यहाँ जन्म लेने वाला हूँ। इस प्रकार यह सिद्ध होता है कि विष्णु भगवान ने ही वसुदेव-देवकी के यहाँ जन्म लिया। जो जन्म लेता है वह तन छोड़ता है वह पूर्णब्रह्म किस प्रकार हो सकता है? जब उसी तन को नन्द जी के घर पहुँचाया गया हो तो गगाचार्य जी ने उसका नाम श्री कृष्ण रखा। उस समय मिथुन राशि तथा मृगारीर नक्षत्र था। जिसके कारण उनका नाम श्री कृष्ण रखा गया। उस तन में अक्षर तथा अक्षरातीत ने प्रवेश किया था।

अब अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म श्री जी साहिब ने २८वें कलियुग में आकर यह भेद खोला कि बृज में २८वें द्वापर में श्रीकृष्ण के तन में बैठकर हमने लीला की थी। इसलिए दुनियां वाले भ्रान्ति में पड़कर मेरे नाटक वाले तन को ही पूर्णब्रह्म कहने लगी किन्तु यह तन तो ११ साल ५२ दिन की लीला के पश्चात सारी सृष्टि के साथ ही लय हो गया था।

ए जो अग्यारे बरस लो लीला करी, कालमाया तितही परहरी।
प्र.हि. ३६/३८

पुनः नित्य वृन्दावन में हमने जो रास की लीला की वहां का श्रृंगार आकार तथा सम्पूर्ण सामग्री अविनाशी थी। लीला करने के पश्चात उसे भी छोड़कर परमधाम चले गए किन्तु दुनिया वाले उन्हे पहचान न सके। बृज में लीला करने वाले उस पारब्रह्म के चरणों में विष्णु भगवान तन धारण करके हाजिर रहे। शंकर भगवान नन्द जी के घर आकर उनके दर्शनों की भीख मांगी। ब्रह्मा जी ने भी अपना अभिमान टूटने के पश्चात चरणो में आकर प्रणाम किया। स्वर्ग के मालिक इन्द्र भी अभिभान टूटने के पश्चात चरणों में आकर नतमस्तक हुए। यह सभी प्रसंग भागवत के दशम स्कन्ध में लिखे है।

नया ब्रह्माण्ड बनने पर गोलोकी शक्ति (श्रीकृष्ण) के द्वारा प्रतिबिम्ब की लीला हुई। जरासन्ध के आक्रमण के समय विष्णु रूप श्री कृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारिका चले गए। वहां पर

Nijanand App

रूक्मिणी हरण करके विवाह किया तथा ११२ वर्ष तक राज्य किया। महाभारत के युद्ध में अर्जुन को गीता का उपदेश देते समय अपनी पहचान कराई कि मैं अनेकों बार जन्म लेता हूँ। ये जो तीन लीलाएँ श्री कृष्ण के नाम से हुई है इसमें एक ही नाम श्रीकृष्ण अवश्य रहा है किन्तु तीन शक्तियां जुदा-जुदा रही है। इसमें ११ साल ५२ दिन तक पारब्रह्म की लीला हुई । इसके बाद जो रास लीला हुई उसमें तन ही अखण्ड है तथा वह शक्ति की लीला हुई तथा बाद में ११ दिन तक गौलोको की लीला हुई लीला हुई। श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कंलक अवतार श्री प्राणनाथ जब तक जाग्रत बुद्धि का ज्ञान लाकर प्रगट नहीं हुए थे तब तक सारी दुनियां श्री कृष्ण जी के मिथ्या तन को ही पूर्णब्रह्म कहती रही तथा आज भी कह रही है।

अब हम इस विषय पर विचार करके देखें कि यदि श्री कृष्ण जी अनादि अक्षरातीत हैं तो वे कलयुग में श्री विजयाभिनन्द बुद्ध निष्कलंक अवतार के रूप में क्यों जाहिर नहीं हुए ? अन्य धर्मोंवाले श्री कृष्ण नाम के आगे झुक नहीं सकते क्योंकि वे हिन्दूओं के भगवान है। पूर्णब्रह्म तो उसी को कहते है जो सबका मालिक है जिसके लिए वेदों में एको ब्रह्म द्वितीयो नास्ति, कुरान में 'कुल्ल हु अल्लाअहद', गुरूनानक देव जी की वाणी में 'नानक एको सुमरिए' तथा बाइबिल में SUPREME TRUTH GOD IS ONLY ONE कहा गया है। दुनिया को नष्ट हो जाने वाले जो झूठे नाम तत्व और गुण है, इनके पार तथा पार के भी पार वह पारब्रह्म है।

इन सब बातों की पहचान वो साहिब जो सबका एक है जिसके लिए २८वें कलयुग में आने के प्रमाण सभी धर्मो के ग्रन्थों में लिखे है। उन्ही श्री प्राणनाथ श्री जी साहिब ने उनके भेद अपनी कलम से श्री बीतक साहिब में लिखे कि 'अथ तीनों सरूपों की बीतक और श्री कुलजम सरूप के कीरतंन ग्रन्थ से तो यह स्पष्ट ही हो जाता है।

ब्रह्मलीला ढांपी हती, अवतारों दरम्यान।
सो फेर आए अपनी, प्रगट करी पेहेचान।।
सो पेहेचान सबों पसराए के, देसी सुख बैराट।
लौकिक नाम दोऊ मेट के, करसी नयो ठाट।। कीरतंन प्र. ५२/२५,२६

अब तक किसी भी अवतार ने आकर यह नहीं कहा कि मेरे लौकिक नाम को मिटा दो नाम से सर्वदा परे रहने वाले पारब्रह्म अक्षरातीत ही अपने पूर्व के दोनों लौकिक नामों श्रीकृष्ण तथा श्री देवचन्द्र जी को मिटाकर ' श्री प्राणनाथ श्री जी साहिब के स्वरूप में जाहिर हुए। प्यारे सुन्दरसाथ जी आप अपने दिल में विचारकर के सोचिए कि परमधाम में श्रीकृष्ण जी हैं या श्री अक्षरातीत पूर्ण ब्रह्म परमात्मा श्री राज जी, श्री जी साहिब जी हैं इसका जवाब हमे आप अपने सुझाव सहित निम्न पते पर भेजें।

भगत राज धामी, मु. धाम पन्ना, जिला पन्ना (म.प्र.)

Nijanand App